(1)

BA-1 (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - एक

प्रो० संजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
R.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

रागतरंगिणी के आधार पर चतुर्भुजक साहित्यिक परिचय :-

गोविन्ददास आ उमापतिक समकक्ष कविलक दृष्टिएँ उत्कृष्ट रचनाकारक रूपमे चतुर्भुजक स्थान निश्चित भए जाइत अछि। हिनक एक गीत रचना 'रागतरंगिणी' मे उपलब्ध छल आ एक गीत रचना ग्रियरसन जर्नल मे प्रकाशित करओने छलाह।

चतुर्भुजक परिचय एखनहुँ धरि पूर्ण रूपें निश्चित नहि अछि। मध्यकालीन मिथिलामे तीन गोट चतुर्भुजक सूचना भेटैत अछि - (1) संस्कृत - काव्य' हरिचरितक रचयिता चतुर्भुज। डॉ० जयकान्त मिश्रक अनुसार हिनके मैथिलीक कवि चतुर्भुज मानैत छथि कारण, ओ कृष्ण-चरित के आधार बनाए पद रचना कएल। मुदा मध्यकालीन पदावली तँ कृष्ण-चरिताहि पर आधारित अछि।
(2) 511 ल०स० (1630) मे वाचस्पतिक 'शुद्धिनिर्णय

क प्रतिलिपिकार चतुर्भुज एवं (3) द्वितीय पत्नीसँ उत्पन्न पण्डितराय रघुनन्दक ज्येष्ठ बालक चतुर्भुज राय। प्रो० रमानाथझाक अनुसार इएह चतुर्भुज राय मैथिलीक सुकवि चतुरचतुर्भुज छलाह। चतुर्भुजराय अमात्य भारत अभिनव - पण्डितराय शंकर अवनिपालनायक मानसिंहक कीर्तिन करने छथि। जिनीमे हिनक दुइ गोट उपाधिक उल्लेख अछि - महामहोपाध्याय ओ मान-मानी पातसाह। हिनक रचनामे उपनिबद्ध पण्डिताम भाषा, क्लिष्ट कल्पना ओ पाण्डित्यपूर्ण उक्ति विच्छित्ति सिद्ध करैत अछि जे हिनक आविर्भाव निश्चय ओहि युगमे भेल जाहि युगमे गोविन्ददासक जन्म भेल छल।

चतुर्भुजक रचना निश्चये उच्च कोटिक अछि। मुदा से जनसामान्यक हेतु नहि, मर्मज्ञ पाठकक हेतु। ग्रियर्सन द्वारा प्रकाशित पद मात्र सरल अछि ओ जाहि मध्य नवोढ़क मनोविश्लेषण बड़ स्वाभाविक रीतिएँ भेल अछि। जेना -

" हृदय धरैत जत गोइ, माधव, नयन बेकत तत होइ।
चतुरचतुर्भुज भान, माधव, पेम न होय पुरान॥"

(signature)